

# हिंदुओं के अपमान की राजनीति करने वालों के लिए कहर सबक है चुनाव परिणाम

कांग्रेस, कम्युनिस्ट और वे तमाम छुटका सेक्युलर दल केवल नफरत, गाली गलौज और अमद्रता के आधार पर मोदी और हिंदुत्वनिष्ठ कार्यकर्ताओं का विरोध कर रहे थे। ऐसे-ऐसे शब्द बोले गए जिनको लिखा नहीं जा सकता, नरेंद्र मोदी पर व्यक्तिगत अमद्र प्रहार किए गए, बंगाल में भाजपा के 68 कार्यकर्ताओं की हत्या की गयी।



नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की असाधारण और अभूतपूर्व विजय ने भारत ही नहीं विश्व की राजनीति में नया अध्याय जोड़ा है। अन्य देशों में ऐसा मौलिक परिवर्तन लाने में सैकड़ों वर्ष और हिंसक क्रांतियों की आवश्यकता हुई थी। भारत की हिंदू सांस्कृतिक धारा ने अंगुली पर तिलक लगाकर भारत को बदलने का आरंभ कर दिया।

इस चुनाव परिणाम ने भारत के विकास को तो राजतिलक लगाया ही पर इससे बढ़कर यह सिद्ध किया कि भारतवर्ष में हिंदुओं के अपमान को राजनीति और सेक्यूलरवाद का आधार बनाने वालों का युग समाप्त हो गया। आश्चर्य इस बात का है कि कम्युनिस्ट पार्टियों के संपूर्ण वाष्पीकरण की कहीं चर्चा तक नहीं है। ऐसा लगता है कि माकपा और भाकपा कभी भारत में जन्मी ही नहीं थीं। बर्धाई।

निश्चित रूप से इसका श्रेय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवकों नरेंद्र मोदी और अमित शाह का संगठनात्मक कुशलता और एकाग्रचित्त धारदार नेतृत्व को जाता है जिन्होंने असंभव से दिखने वाले परिणाम संभव कर दिये और सेक्यूलर माफिया का अंधेरा युग पराभूत किया जो भारत में हिंदुओं के अपमान तथा विरोध का पर्याय बन गया था।

यह चुनाव परिणाम सभ्यतामूलक है तथा राष्ट्रीय समाज की मानसिकता को विदेशी गुलामी से स्वदेशी गौरव की ओर ले जाने वाले सिद्ध होंगे। सरकार अच्छी चलेगी। पहले से बेहतर परिणाम लायेगी, पर जो सामाजिक परिवर्तन इस राजनैतिक परिवर्तन के असर से स्वतः प्रारंभ होंगे वे दूरगामी परिणाम देंगे जो सरकारी कामकाज से परे

और उसके असर से भी असरहीन रहेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाजपा मुख्यालय से विजय उद्घोषण एक विनम्र उदार और सर्वस्पर्शी नेता का राष्ट्रीय उद्घोषण था जो कदुता, विद्वेष तथा राजनीतिक अस्पृश्यता से मीलों दूर एक विराट दृष्टि वाले भारतीय नेता का उद्गार था।

यह उस हिंदू मन की तड़फ, वेदना और सपनों का समुच्चय था जिसके भीतर सदियों से इस देश में हिंदुओं को होने वाले आघातों, आक्रमणों और अपमान की स्मृति थी और यह स्मृति थी कि 1947 में देश विभाजन के बाद मिली आजादी के 70 वर्ष उस सेक्यूलर व्यवस्था के नफरत भरे प्रहारों से गुजर रहे हैं जब हिंदू आत्म गौरव का भाव ही अपराध था और भारतीय राष्ट्रीय एवं देशभक्ति के लिए जीने वाले कार्यकर्ताओं को लोकतंत्र की मशाल जलाए रखने के लिए कश्मीर से केरल और केरल से बंगाल तक अपने बलिदान देने पड़े। वर्तमान युग में राष्ट्रीय सेवक संघ की विचारधारा से प्रेरित सैकड़ों कार्यकर्ता जिन्होंने भरी जवानी में अपने धर्म, संविधान और तिरंगे झंडे के लिए सेक्यूलर बर्बर हमलावरों जिन्होंने जिहादी और कम्युनिस्ट प्रमुखता शामिल हैं, के हमले सहे, विजय की इस घड़ी में कोटि कोटि नमन के अधिकारी हैं।

कांग्रेस, कम्युनिस्ट और वे तमाम छुटका सेक्यूलर दल केवल नफरत, गाली गलौज और अमद्रता के आधार पर मोदी और हिंदुत्वनिष्ठ कार्यकर्ताओं का विरोध कर रहे थे। ऐसे-ऐसे शब्द बोले गए जिनको लिखा नहीं जा सकता, नरेंद्र मोदी पर व्यक्तिगत अमद्र प्रहार किए गए, बंगाल में भाजपा के 68 कार्यकर्ताओं की हत्या की गयी। उनके शव पेड़ों से लटकए गए। उनको शारीरिक यातनाएँ दी गयीं। दुर्गा पूजा विसर्जन पर

प्रतिबंध लगे, लेकिन मुहर्रम के लिए विशेष छुट्टियाँ और व्यवस्थाएँ दी गयीं। केरल में हिंदुओं के धर्मस्थान सबरीमाला की मर्यादा को भंग किया गया। संघ के सेवकों और भाजपा के कार्यकर्ताओं की नृशंस हत्या की गयी।

ऐसा लगता था ये सेक्यूलर माफिया गैंग अपने धन-मन और दशकों से चली आ रही सत्ता के अहंकार में इतना चूर था कि उसे लगता था मीडिया की सुर्खियाँ बना लें, बेसिर-पैर के झूठे आरोप लगाते रहे, चुनाव में पानी की तरह पैसा बहाते रहे कि वे जनता को मूर्ख बना सकते हैं और जीत सकते हैं। लेकिन संघ की व्यवस्था पद्धति, अनुशासन और एकचित्त भाव से लक्ष्य प्राप्ति के लिए संधान करने वाले भाजपा नेतृत्व ने राष्ट्रीय संगठन से लेकर सबसे निचले स्तर के फ़ा प्रमुख तक की ऐसी सुघड व्यवस्था की जिसमें कोई चूक होने की संभावना ही नहीं थी। प्रधानमंत्री मोदी ने भी अपने विजय उद्घोषण में पत्रा प्रमुखों का जिक्र किया।

## कौन हैं वे कार्यकर्ता

ये वो हैं जो पीढ़ियों से भारत को बदलने की उद्दाम जिद मन में संजोए चुपचाप शालीनभाव से विचारधारा के लिए काम करते आ रहे हैं। इन्हें पद प्रतिष्ठा अलंकरण नहीं चाहिए, बल्कि अपनी आंखों से बदलते भारत की तस्वीर देखना चाहते हैं। ये वो लोग हैं जो निम्न माध्यम श्रेणी के नागरिक हैं, जो स्वयं या जिनके बेटे-बेटियाँ या भाई देश के विभिन्न कोनों में भारत भक्ति और राष्ट्रीय एकता का अलख जगाने विभिन्न संगठनों के माध्यम से वर्षों से काम करते आ रहे हैं। इनमें वे लोग भी बहुत बड़ी संख्या में जुड़े हैं जिनके लिए विचारधारा का अर्थ केवल दो शब्द रहे- भारत उदय। ऐसा भारत जहाँ गरीबी न हो,

किसान खेती से धन और प्रतिष्ठा पाए, अस्पताल और सड़कें विश्वस्तरीय और शानदार हों, भारतीयता, हिन्दू धर्म पर आघात बंद हों, विद्यालयों में सही इतिहास और पूर्वजों का यश पढ़ाया जाए, सत्ता से वैचारिक भेदभाव का अंत हो। मोदी ने यह सब करने का साहस दिखाने का भरोसा दिलाया, बालाकोट में पाकिस्तान के भीतर घुसकर उसकी ऐंट निकाली, चीन को अहंकार छोड़ मसूद अजहर पर भारत के साथ खड़ा किया, इजरायल से प्रचीन हिन्दू यहूदी संबंध पुनर्जीवित किए। अमेरिका को भारत से बराबरी से बात करने का सलीका सिखाया। तो भारत की जनता भाजपा में भारत की जयकार क्यों न देखती।

नरेंद्र मोदी ने इनके मन को छू लिया और उन्हें विश्वास दिलाया कि वह हिन्दुस्तान बदल सकते हैं और स्वयं फकीर की तरह रहेंगे, लेकिन जन-जन को समृद्ध करने का सपना साकार करेंगे।

पर यह याद रखना होगा कि विजय का मुकुट उन अनाम अजान कार्यकर्ताओं के लिए नहीं है और बलिदान से रंगा है और पार्टी के शिखर से सामान्य स्तर तक के कार्यकर्ताओं की एकजुटता ने विजय का उद्घोष प्रबल किया। आखिरकार अरुणाचल से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लखनऊ तक विराट राजमार्गों तथा जलमार्गों का जो संजाल बिछ, गांव गांव बिजली और सौर ऊर्जा, गरीब महिलाओं को उज्वला गैस, बेटियों को सुरक्षा और अच्छे विद्यालय, जीएसटी द्वारा कर वंचना पर रोक, इनसोलवेंसी एक्ट- दिवालिया कंपनियों की जालसाजी रोकने का कानून, भ्रष्टाचार पर नकेल और विदेश नीति की इतनी अपार सफलता, पहली बार स्वदेश के चुनाव पर विदेश नीति का प्रभाव महसूस किया। यह

सब टीम का काम था। मंत्रिमंडल के कुछ ऐसे गौरवशाली नाम जन जन में भाजपा सरकार का यश बढ़ाते ही गए और यह विश्वास भी गहराते गए कि मोदी हैं तो मुमकिन है।

राहुल गांधी की अमेठी में पराजय विजय के मोदक पर देवी के तिलक की तरह शुभ कही जा सकती है। स्मृति ईगनी ने पिछले पांच साल अमेठी को अपने विशेष संसदीय क्षेत्र के नाते पाला पोसा और संरक्षित किया। वास्तव में अमेठी से न चुने जाने के बावजूद अमेठी की सांसद के नाते स्मृति ने ही काम किया राहुल ने नहीं। स्मृति की मेहनत को अमेठी ने स्वीकार किया और राहुल को वायनाड के कोने तक भागना पड़ा। विष और हिंदू विद्वेष से भरे दिग्विजय सिंह के समक्ष सेक्यूलर सत्ता की नृशंसता का शिकार साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को लड़ा कर भाजपा ने संताप और वेदना से तड़फ रहे हिन्दू हृदय को शांति की ठंडक दी जिसके लिए भाजपा नेतृत्व का बहुत-बहुत आभार।

चंद्रबाबू नायडू जैसे कहरा जुवान और भ्रष्टाचारी व धमंडी नेता को आंध्र ने सबक सिखाया। कश्मीर से धुर दक्षिण तक कांग्रेस और उसका परिवारवाद शून्य, शून्य और शून्य डूबता चला गया। इसे मात्र राजनीतिक परिवर्तन नहीं बल्कि हिंदुओं के प्रति की गई शब्द हिंसा और विश्वासघात का लोकतांत्रिक प्रतिशोध ही कहा जाएगा। जम्मू कश्मीर से महबूबा की हिन्दू और हिन्दुस्तान विदेशी राजनीति भी इसी तुफान में मिट्टी में मिल गई। इस मुकुट पर मयूर पंख की तरह शोभायमान उत्तर प्रदेश की विजय कही जा सकती है, जहाँ मायावती और अखिलेश का हिंदू समाज को विध्वंसित करने का सपना चकनाचूर हो गया।

नरेंद्र मोदी ने एक परम निष्ठावान शिवभक्त के नाते काशी का ही कायांतरण और रूपांतरण नहीं किया जिसका पुण्य उन्हें बाबा के दारनाथ से अवश्य दिया लेकिन साथ ही हिंदू मन की वेदना पर अपनी भक्ति और श्रद्धा से जो रहत का स्पर्श किया वह उन्हें हजार साल बाद हिंदू मन की वास्तविक विजय का प्रतीक बना गया। इस संपूर्ण उपक्रम में अमित शाह की संगठनात्मक कुशलता ने उन्हें एक नवीन चाणक्य और राजनीति के शिखर रणनीतिकार के नाते स्थापित किया है।

काम तो अब शुरू हुआ है। सबसे बड़ा लक्ष्य अर्थव्यवस्था को बढ़ाना, आठ प्रतिशत तक की विकास दर को लंबे समय तक टिकाए रखने की क्षमता हासिल करना और उसे डबल डिजिट यानि दस तक ले जाना, किसान को भारत के विकास का केंद्र बिंदु बनाना, शिक्षा में परिवर्तन को सैन्य शक्ति बढ़ाने के समान महत्व देना और इंफ्रास्ट्रक्चर यानि ढाँचागत विकास की गडकरी नीति को सशक्त करना यदि तात्कालिक प्रमुख एजेंडा है तो अब जनता सवाल यह भी पूछेगी कि 370 कटने के लिए अब कोई बहाना नहीं चलेगा और राम मंदिर निर्माण की तारीख शपथ ग्रहण के बाद कब बतायी जायेगी इसका इंतजार रहेगा।

अब किंतु परंतु, करेंगे थोड़ा इंतजार करो, वगैरह वगैरह सुनने का मूड कम होगा। विजय का उत्साह उन्माद में न बदले, जनता का श्रद्धामय अलंकार अहंकार में न बदले, सत्ता के पांच साल पलक झपकते बीत जाते, पर अपने साथियों और कार्यकर्ताओं के अपमान की गंध जीवन भर जिंदा रहती है। प्रशंसा के साथ मित्रों के कल्याणकारी आलोचक स्वर जब तक सम्मान पाएंगे तब तक भारत राष्ट्र की नवीन विकास गाथा का यह सफर अविरोधेन, निर्बाध अक्षमंथ यज्ञ के अर्थों की तरह विजय पथ पर बढ़ता रहेगा।